नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवम्भूता नयाः।।33।।

नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ और एवंभूत

– ये सात नय हैं।।33।।

नय

जो पदार्थ क एक
अंश को जाने या कहे

www.JainKosh.org

नय किसमें लगते है?

- ज्ञान में
- वाणी में

नय किसमें नहीं लगते हैं?

- वस्तु में
- क्रिया में

नय

द्रव्यार्थिक

जो द्रव्य को ग्रहण करे

पर्यायार्थिक

जो भेद का ग्रहण करे

www.JainKosh.org

www.JainKosh.org

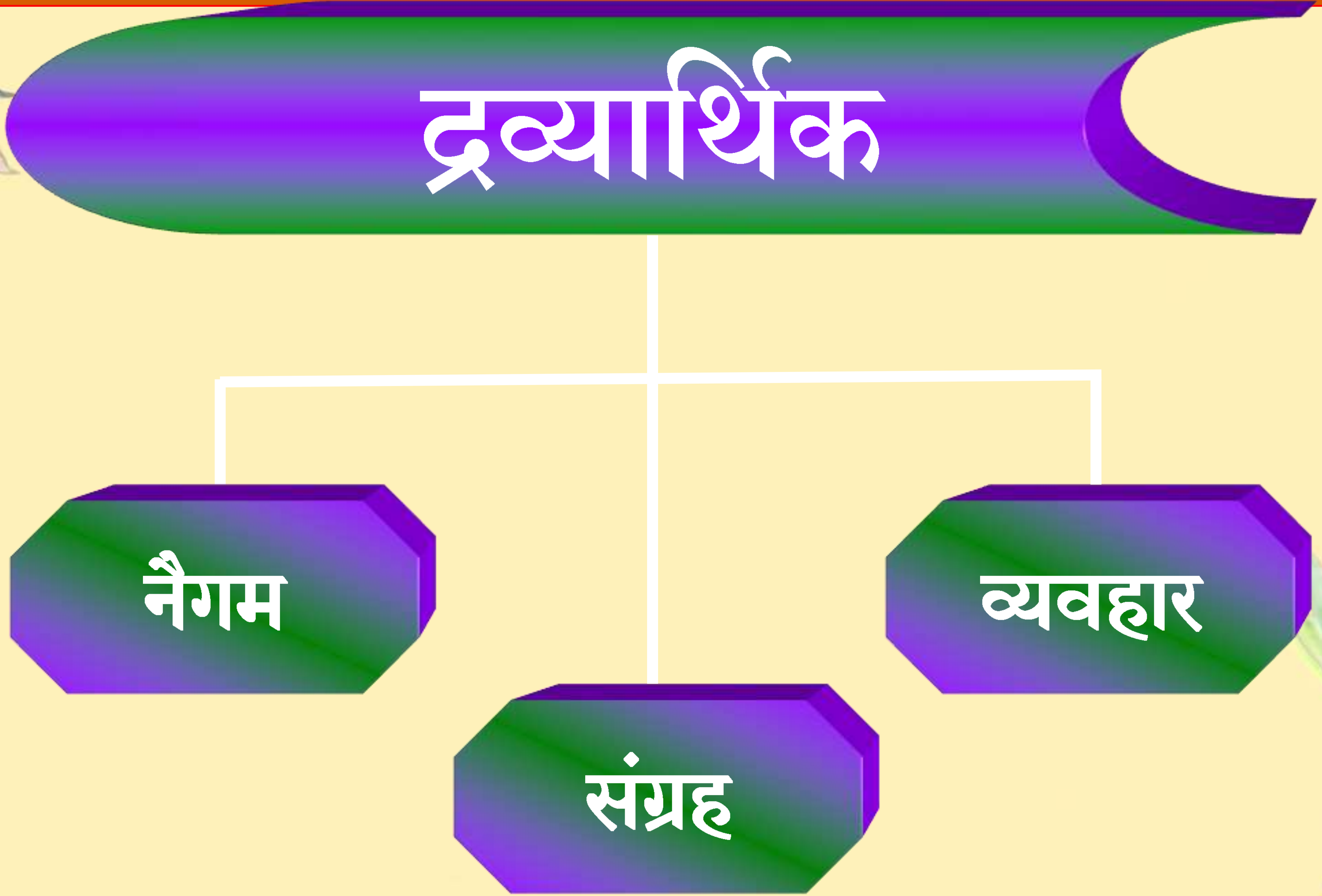

www.JainKosh.org

पर्यायार्थिक

- ऋजुसूत्र
- शब्द
- समभिरूढ़
- एवंभूत

www.JainKosh.org

नैगम नय

जो भूत और भविष्य पर्यायों में वर्तमान का संकल्प करता है

या वर्तमान जो पर्याय पूर्ण नहीं हुई है उसे पूर्ण मानता है

उस ज्ञान तथा वचन को नैगम नय कहते हैं।

नैगम नय

भूत	भावी	वर्तमान
“आज भगवान महावीर का मोक्ष कल्याणक है”	“यह डॉ. है”, “यह राजा है”	“भात पाक गया है”

संग्रह नय

अपनी-अपनी जाति के अनुसार

वस्तुओं का या उनकी पर्यायों का

एक रूप से संग्रह करने वाले

ज्ञान को और वचन को

संग्रहनय कहते हैं|

व्यवहार नय

संग्रह नय से ग्रहण किये हुए पदार्थों का

विधिपूर्वक भेद करना

व्यवहार नय कहलाता है |

ऋजुसूत्र नय

भूत और भावी पर्याय को छोड़कर

जो वर्तमान पर्याय को ग्रहण करता है

उसे ऋजुसूत्र नय कहते हैं |

ऋजुसूत्र नय

सूक्ष्म	स्थूल
एक समय की पर्याय को ग्रहण करे	एक स्थूल पर्याय जब तक रहती है

www.JainKosh.org

शब्द नय

लिंग, संख्या, और साधन आदि

के व्यभिचार की निवृत्ति कराने वाले

नय को शब्द नय कहते हैं ।

उदाहरण

लिंग व्यभिचार

- आत्मा जानता है

काल व्यभिचार

- मैं अगले साल आई थी

सममभिरूढ़ नय

जो अनेक अर्थों को ‘सम’ अर्थात् छोड़कर प्रधानता से एक अर्थ में रूढ़ होता है उसे सममभिरूढ़ नय कहते हैं ।

‘गो’ इस शब्दके वचन आदि अनेक अर्थ पाये जाते हैं तो भी वह ‘पशु’ इस अर्थ में रूढ़ है।

सममभिरूढ़ नय

अथवा यदि शब्दों में भेद है तो अर्थ भेद अवश्य होना चाहिये । नाना अर्थों का समभिरोहण करनेवाला होनेसे समभिरूढ़ नय कहलाता है।

इस नय में पर्यायवाची शब्द नहीं पाए जाते हैं

इन्द्र	• आज्ञा-ऐश्वर्यवान
शक्र	• समर्थ
पुरंदर	• नगर का दारण करने वाला

एवंभूत नय

जो वस्तु जिस पर्याय को प्राप्त हुई है

उसी रूप निश्चय करने वाले नय को

एवंभूत नय कहते है ।

उदाहरण

पुजारी	• पूजा करते समय ही पुजारी
अध्यापक	• पढ़ाते समय ही अध्यापक
गो	• चलते समय ही गाय

विशेष

- उत्तरोत्तर सूक्ष्म होने के कारण इनका क्रम इस प्रकार कहा है |
- शब्द नय पर्यायवाची शब्दों को तो ग्रहण करता है किन्तु समभिरूढ़ नय पर्यायवाची शब्दों को ग्रहण नहीं करता है |
- समभिरूढ़ नय से जिस अर्थ के लिए जिस शब्द को स्वीकार किया है एवंभूत नय में तो वह शब्द भी क्रिया के परिणमन के समय ही लागू होगा |